Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

'डाक बँगला': एक स्त्री जीवन

प्रा. डॉ. बिक्कड ए. एस.
हिन्दी विभाग,
राष्ट्रमाता इंदिरा गांधी कला, वाणिज्य एवं
विज्ञान महाविद्यालय, जालना

डाक बँगला यह उपन्यास कमलेश्वर का है। इस उपन्यास का प्रकाशन 1975 में नई दिल्ली से प्रथम संशोधित संस्कर है। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने 'इरा' नामक स्त्री की आपबीती को आत्म कथात्मक शैली में चित्रित किया है। उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य 'इरा' के माध्यम से 'डाक बँगला' के प्रतीक को प्रस्तुत करने का अनोखा प्रयास रहा। उपन्यासकार ने व्यक्तिक के जीवन के अकेलेपन को सामाजिक और असामाजिक इन दोनों संदर्भो में अत्यंत संवेदनशीलता के साथ कहा है। यह उपन्यास काश्मीर की सुंदर भूमि में लिखा गया है। यहाँ मिली एक स्त्री 'इरा' की कथा को सुक्ष्मता, सहजता एवं यथार्थ में लिखा है। नारी जीवन की कष्ट दायक अनुभूतियों का 'डाक बँगला' एक उपलब्धि है। इस उपन्यास में एक असाधारण नारी 'इरा' के माध्यम से एक साधारण नारी की बाह्य और अंतरिक संघर्ष को स्पष्ट किया है।

इस उपन्यास की कहानी 'इरा' और कई पुरुषों के बीच में रहती है। उपन्यास का मुख्य केंद्र बिंदू बीच में रहती है। इस उपन्यास मुख्य केंद्र बिंदू 'इरा' नामक युवती है। जिन्होंने अपने जीवन में अनेक चढ़ाव-उतार देखे हैं। उसे जो अच्छा, बुरा तथा सौंदर्य कुरुपता के बीच से पूरी तरहसे टूट जाती है। इरा एक मध्यम वर्ग की नायिका और विधवा स्त्री है। जो काश्मीर में सोलंकी के साथ कुछ दिन के लिए डाक बंगले में रहती है।

इस यात्रा में इरा सोलंकी के साथ इधर उधर भटकती है। इसी यात्रा में वह तिलक के साथ इधर उधर सैर करते हुए वह अपनी अतीत की कहानी तिलक से बताती है। यह कहानी वर्तमान की एक यात्रावृत्तांत है, जो पहलगाम से लेकर कोलहई तक की है। कमलेश्वरने इरा और तिलक इन दो पात्रों को मंच पर प्रस्तुत किया है। इरा एक सुंदर विधवा स्त्री है। जिसके आजू बाजू में विमल बतरा, डॉ. चंद्रमोहन फौजी, सोलंकी और तिलक ये पाँच नाम उनके साथ जुडे है। इरा

का चरित्र विशेष ढंग से चित्रित हुआ है। वह हमेशा पिछले जीवन को भूल जाती और नया जीवन शुरु करती है। उसके साथ जिन पुरुषों का संबंध आया है उन्होंने यहीं किया है। परंतु इरा विमल को आखरी साँस तक नहीं भूल पाती। विमल को खुद ना चुनना था परंतु उसका सपना इसके साथ कभी पुरा नहीं हो पाया। इरा बीसवीं सदी का संक्रमण ग्रस्त भारतीय समाज का जीवन और दयनीय चित्र प्रस्तुत करती है। इरा का जीवन खुद एक 'डाक बँगला' बनके रह गया है।

इरा के पिता फौज में थे और बिना माँ इरा नौकरों के हाथों पलती रही। कॉलेज में पढ़ते समय नाटक लिखती और खूब खेलती थी। पढ़ते समय उसका परिचय विमल से होता है। दोनों नाटक समारोह में भाग लेने जाते थे। इरा और विमल का प्रेम इसी समय होता है। इस प्रेम की खबर इरा के पिता को हो जाती है। इसके पिता इस प्रेम का खूब विरोध करते परंतु इरा ने एक नहीं मानी वह समाज की परवाह किये बिना अपनी बात स्पष्टता के साथ रखती है "दुनिया दिखावे के लिए कबतक अलग रहती ? उसमें रखा भी क्या था। मैं खुल्लमखुल्ला विमल के साथ रहने लगी थी। और डॅडी से संपर्क संबंध सब कुछ टूट गया था।"[1]

इरा ने अपने जीवन में आये पुरुष विमल को सबकुछ समर्पित कर दिया। दोनों एक दुसरों को बहुत चाहते थे, परंतु दोनों को तकदरी ने साथ नहीं दिया। विमल को अपने व्यवसाय में जादा सफलता नहीं मिली। इसीलिए दोनों शादी करके दिल्ली चले जाते हैं। दोनों का एक स्थाई रंगमंच स्थापित करने का सपना टूट जाता है। आर्थिक अभाव के कारण विमल ने इरा को बतरा के यहाँ नौकरी करने को मजबूर कर दिया। उसे नौकरी मिली परंतु विमल दूर हो गया। वह हमेशा उसपे शक लेने लगा। इसी शंकालू वृत्ति ने उसे खो दिया। वह उसे छोडकर दूसरे गाँव चला जाता है। कई दिन तक उसका कोई आता पता नहीं रहा परंतु मालूम हुआ कि आगरा में वह क्रांतिकारियों के साथ पकडा गया है।

विमल जाने के बाद इरा के पास में दूसरा कोई मार्ग नहीं रहा। वह मजबूर होकर बतरा के यहाँ रहने लगी। स्त्री बगैर पुरुष के बिना अच्छी जिंदगी जी नहीं सकती। इरा समाज का विश्लेषण करती हुई तिलक से कहती है - "पर तिलक यह तुम्हारी दुनिया बहुत कमीनी है। यहाँ औरत बगैर आदमी के रह ही नहीं सकती। चाहे उसके पास उसका पति हो, या भाई, या बाप। कोई न हो तो नौकर ही हो। पर आदमी की छाया जरुर चाहिए। इसलिए हर एक लडकी कवच

ढूँढती है वह चाहे पति का हो, भाई या बाप या झूठे रिश्तेदार का। इस कवच के नीचे वह अच्छा या बुरा हर तर का जीवन बिता सकती है। उसे पहनने के लिए जैसे एक साडी चाहिए, वैसे ही यह कवच भी चाहिए।"[2]

पितृसत्ताक समाज में स्त्री को एक भोग्य वस्तू समझा जाता है। स्त्री को समाज में हमेशा पुरुषों पर आश्रित रहना पड़ता है। पुरुष के बिना उसका जीवन अधूरा रहता है। वह सुरक्षित नहीं रह सकती।

विमल मुंबई जाते ही इरा का सहारा बतरा बन जाता है। उसके जीवन का दूसरा अध्याय बतरा के घर से आरंभ होता है। वह उनके यहाँ टेलिफोन अटेंड करने का काम करती है। वह अकेला रहता है बँगला फोन और क्लबों में जाना बतरा का पेशा था। वह शराब भी पिता था। शराब पिने के बाद औरत के साथ खिलवाड करके दलाली भी करता था। बतरा के यहाँ एक दिन अचानक शीला नाम की औरत आ जाती है। बतरा ने इरा को कहा यह मेरी पत्नी है। वक्त और पैसे की मार ने उसे बूरा बना दिया इस पर इरा का कथन है, "उक्ताकर में खड़ी हो गई थी। मुझे उस वक्त बतरा की दुनियाँ झूठ और विलासिता की नकाब पहनकर असलियत साबित करने की दुनियाँ लगी थी। पर आज मैं इन राहों से गुजरकर आई हूँ कुछ भी मान सकने को तैयार हूँ।"[3]

बतरा और शिला दोनों पडोसी थे परंतु दोनों बिछड गये। फिर दोनों का विमल बतरा के दोस्त की पत्नी विना ने किया। बतरा एक ऐसा पात्र है वह गृहस्ती जीवन में नहीं रहना चाहता। बतराने शीला के कारण 'इरा' को फेंक दिया। इरा का जीवन फिर अकेला हो जाता है। उसका संबंध डॉ. चंद्रमोहन के यहाँ ट्यूटर गार्डियन की नौकरी मिल जाने से उसका जीवन तृतीय अध्याय आरंभ होता है। इसके बाद में इरा के जिंदगी में चौथा पुरुष मेजर सोलंकी आता है। सोलंकी इरा को सहचरी बना देता है। उसके बाद में तिलक के सामने मेजर सोलंकी इरा को अपना बनाने की लालसा व्यक्त करता है।

इरा ने जिंदगी में सिर्फ विमल से प्रेम किया और कईबार प्रेम करने का नाटक किया। इरा शेष पुरुषों को प्यार नहीं करती दया करती है। एक तिलक उसे अपना राजा बताया था क्योंकी वह इरा के नाटक का पात्र नहीं था। इरा के लिए विवाह एक नाटक तिलक के साथ खेल नहीं

सकती थी। इरा के जीवन का संघर्ष शुरु लेकर चलता रहा। यह संघर्ष सामाजिक व्यवस्थाओं तथा विधानों के प्रति मानवीय संघर्ष का जाता है।

संदर्भ सूची :

1. कमलेश्वर शब्दाकार - संपा. मधूकर सिंह, पृ. क्र. 187
2. डाक बँगला - कमलेश्वर प्रकाशन : राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ. सं. 334
3. डाक बँगला - कमलेश्वर - पृ. सं. 44